B.A Part-1 Psy. Subsidiary Paper- General Psychology Topic-Role of Motivation in Learning. Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt. of Psychology Vaishali Mahila College, Hajipur).

सीखने की प्रक्रिया में अभिप्रेरणा का महत्व

(Role of Motivation in Learning)

चाहे पशु सीखना (animal learning) हो या मानव सीखना (human learning) उसमें अभिप्रेरणा (motivation) का विशेष महत्व होता है। अभिप्रेरणा से सीखने की प्रक्रिया तीव्र गति से होते देखी गयी है क्योंकि अभिप्रेरणा की अवस्था मानव या पशु को

सही अनुक्रिया करने के लिए एक तरह का आंतरिक बल प्रदान करता है।

मनोवैज्ञानिकों ने पशु सीखना में मूलत: जैविक अभिप्रेरकों जैसे-भूख, प्यास, काम, नींद आदि प्रभाव को अधिक महत्वपूर्ण माना है क्योंकि ऐसे ही अभिप्रेरक के कारण वे किसी अनुक्रिया को सीखते हैं। जहां तक मानव सीखना में अभिप्रेरक के स्थान का महत्व है इसमें यह बात सही है कि पशु के समान मनुष्य भी जैविक अभिप्रेरकों के कारण सीखते हैं परंतु ऐसा बहुत कम होते देखा गया है मानव सीखना में जैविक अभिप्रेरक का महत्व कम परंतु अर्जित अभिप्रेरणा का महत्व अधिक होता है। पैसा

कमाना, समाज में इज्जत पाने की इच्छा, प्रशंसा किए जाने की इच्छा, द्वेष, प्रतिस्पर्धा करना, ऊंचा पद पाना, आदि कुछ महत्वपूर्ण अर्जित अभिप्रेरक के उदाहरण हैं। सीखने पर इनमें से सभी का तो नहीं परंतु कुछ के प्रभाव का अध्ययन मनोवैज्ञानिकों ने किया है और बताया है कि सीखने की प्रक्रिया में सभी प्रेरकों का महत्व काफी है।

मनोवैज्ञानिकों द्वारा पशु एवं मानव सीखना के क्षेत्र में कई रोचक प्रयोग किए गए हैं। यहां हम मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए गए पशु सीखना में अभिप्रेरकों के महत्व अध्ययन करेंगे।

पशु सीखना में अभिप्रेरकों का महत्व

(Role of Motives in Animal learning)

सीखने के क्षेत्र में अनेकों ऐसे प्रयोग पशु पर किए गए जिनसे यह स्पष्ट हो गया है कि जब पशु में तीव्र अभिप्रेरक होता है तो वह किसी अनुक्रिया को जल्द सीख लेता है। यहां पर उदाहरण के रूप में कुछ प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है।

Tolman तथा Honzik (1930) ने एक प्रयोग किये जिसमें चूहों का तीन समूह था और तीनों समूह को एक ही तरह की भूल भुलैया में प्रशिक्षित किया गया। चूहों का पहला समूह ऐसा था जो भूखा नहीं था और लक्ष्य

बॉक्स (goal box) में पहुंचने के बाद उसे भोजन भी नहीं दिया जाता था। चूहों का दूसरा समूह ऐसा था, जो भूखा था परंतु प्रयास समाप्त होने के बाद जब वे लक्ष्य बॉक्स में पहुंचते थे तो उन्हें भोजन नहीं दिया जाता था। तीसरा समूह भी भूखा था तथा बॉक्स में पहुंचने के बाद उसे भोजन भी दिया जाता था। परिणाम में देखा गया कि तीसरा समूह जो भूखा था अर्थात जिसमें भूख अभिप्रेरक मौजूद था तथा जिसे भोजन भी मिलता था द्वारा अन्य दो समूहों की अपेक्षा भूलभुलैया जल्द सीख लिया गया तथा इस समूह द्वारा सीखने में त्रुटियां (errors) भी बहुत कम की गयीं। प्रयोग के

इस परिणाम से स्पष्ट हो जाता है कि भूख अभिप्रेरक के मौजूद होने से चूहों द्वारा भूलभुलैया को जल्दी सीख लिया जाता है।

दूसरा प्रयोगात्मक अध्ययन जिसे मैककिनटोस (Mackintosh,1974) ने किया, द्वारा यह दिखलाया गया है कि जब पशुओं में दो प्रकार के अभिप्रेरक एक ही साथ वर्तमान होते हैं तो उनके द्वारा सीखने की प्रक्रिया अधिक तेजी से संपन्न होती है। इस अध्ययन में चूहों का तीन समूह लिया गया। पहला समूह बहुत भूखा तथा बहुत प्यासा था। दूसरा समूह बहुत भूखा था, परंतु बहुत ही कम प्यासा था तथा तीसरा समूह बहुत प्यासा था परंतु बहुत ही कम भूखा था। इन

तीनों समूहों को एक ही तरह की भूलभुलैया सीखने को दिया गया तीनों समूह को 18 दिनों तक प्रशिक्षण दिया गया। प्रथम 9 दिनों तक तीनों समूह के चूहों को लक्ष्य बॉक्स में पहुंचने पर ठोस आहार दिया गया तथा अंतिम 9 दिनों में तीनों समूह के चूहों को लक्ष्य बॉक्स में पहुंचने पर ठोस आहार न देकर सिर्फ पानी दिया गया। प्रयोग के परिणाम बहुत ही रोचक थे। प्रथम 9 दिनों में पहले समूह ने जिसमें दो अभिप्रेरक एक साथ तीव्र मात्रा में मौजूद थे (क्योंकि समूह भूखा तथा प्यासा दोनों ही था) अन्य दो समूहों की अपेक्षा तेजी से भूलभुलैया के प्रारंभ बॉक्स से लक्ष्य बॉक्स तक दौड़

लगाना सीख लिया। अंतिम 9 दिनों में जब ठोस भोजन के जगह पर पानी दिया गया, तो इस तरह के परिवर्तन से पहले समूह के निष्पादन में अन्य दो समूहों के निष्पादन (performance) की अपेक्षा थोड़े समय के लिए कमी आयी परंतु फिर दो-तीन दिन के बाद इसका निष्पादन (Performance) अन्य दो समूहों से काफी आगे हो गया। इससे स्पष्ट हो जाता है कि पशुओं में जब दो अभिप्रेरक एक साथ मौजूद रहते हैं तो उनके द्वारा सीखने की प्रक्रिया तेजी से होती है।